इन प्रकरणों का भावार्थ क्रमशः इस प्रकार से है :

१. हे मेरे अखण्ड परमधाम के धनी! प्रेम जाहिर करने की वस्तु नहीं है। इसका आनन्द तो अखण्ड परमधाम में अपने घर में जहां कोई देख नहीं सकता, जहां एकदिली है वहीं लिया जा सकता है। हे नन्द के कुमार! मेरे प्रीतम! यहां माया में आपको निर्लज्ज (बेशर्म) कहा जाएगा।

२. आप अपनी अंगना को देखते ही बावरे हो जाते हो, क्योंकि आपका स्वरूप तो सदा अखण्ड प्रेम से भरा है। यहां संसार में मेरा और पति भी है जिससे मैं कुलवन्ती (कुलीन) नारी कहलाती हूं। आप मुझे रास्ते में कितनी-कितनी देर रोककर खड़े रहते हो।

३. माया को हटाकर मेरे सामने आते हो फिर भी मैं पहचान नहीं पाती। इस संसार में इस सम्बन्ध को कोई जानता ही नहीं। बुरे लोगों की दृष्टि में विचार रहता है। वह इसको कैसे समझेंगे? आप अखण्ड प्रेम में मग्न रहकर संसार को क्या समझें? परन्तु यहां की लोक-लाज तो मुझे सताती है।

४. आपने तो अंगना जानकर जबरदस्ती मेरी लोक लाज को उतार दिया और अपनी प्रेम भरी अखण्ड वाणी के रस से मेरी जहर भरी अज्ञानता को चूस कर मेरे अन्दर प्रेम का रस भर दिया। अज्ञानता के हटने पर अब लड़ाई काहे की रही? आपका प्रेम से भरा स्वरूप तो सौदाई (आशिक) जैसा लगता है। मैं अपने को ज्ञान से भरपूर बुद्धिमान समझती थी। आपके प्रेम को न पहचान कर बावरा बच्चा समझकर मना करती थी। आपने मेहर कर सब अज्ञानता हटाकर मूल निसबत की पहचान करा दी। यह मैं किसको कहूं? कौन समझेगा? यहां आपने मेरी लोक-लाज को फाड़कर हटा दिया। नवधा की भक्ति रूपी नवसर हार को तोड़ दिया और कुलवंती (कुलीन) नारी के गले की माला तोड़कर अखण्ड घर और पति की पहचान करा दी। इससे मेरी माया वाली भूल से हुई हालत को हटाकर परमधाम की निसबत (सम्बन्ध) को जागृत कर दिया। तो अब इस माया रूपी संसार में कौन जाएगा? आपने मेरी गुण अंग इन्द्रियों को ही बदल डाला है।

श्री महामतिजी कहते हैं कि माया में होने पर भी धनी से मैं एकाकार होकर अंगों-अंग मिलकर एक रूप हो गई। इसलिए अब मुझे धनी अपने संग ही घर लेकर चलेंगे।

राग श्री गौरी

खोज थके सब खेल खसमरी।
मन ही में मन उरझाना, होत न काहू गमरी।। १ ।।टेक।।

श्रीमहामतिजी कहते हैं, इस संसार में सब पारब्रह्म को खोज-खोजकर थक गए, पर अक्षर ब्रह्म के मन (अव्याकृत) और उसके मन नारायण की सृष्टि में ही उलझे रहे। किसी को पारब्रह्म की पहचान नहीं हुई।

मन ही बांधे मन ही खोले, मन तम मन उजास।
ए खेल सकल है मन का, मन नेहेचल मन ही को नास।। २ ।।

इस संसार में मन से ही बंधते हैं और मन से छूटते हैं। मन में ही अज्ञानता का अन्धकार आता है और मन में ही ज्ञान का उजाला होता है। यह सारा संसार आदि नारायण की चाहना से बना है। नारायण जब तक है तब तक संसार जो नारायण के मन का रूप है, खड़ा है। महाप्रलय में संसार मिटते ही नारायण समाप्त हो जाते हैं।

Nijanand App

मन उपजावे मन ही पाले, मन को मन ही करे संघार।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन निरगुन निराकार।। ३ ।।

मन (आदि नारायण) से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश बने हैं। यह सृष्टि के पैदा करने का, पालने का और नाश करने का काम करते हैं। इस संसार के पांचों तत्व, दसों इन्द्रियां तथा तीनों गुण मन के ही रूप हैं। यह अन्त में निराकार में मिल जाते हैं।

मन ही नीला मन ही पीला, स्याम सेत सब मन।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मन ही जड़ मन ही चेतन।। ४ ।।

नीला (आकाश), पीला (पृथ्वी), श्याम (अज्ञानता), श्वेत (ज्ञान) मन के ही रूप हैं। संसार में कोई छोटा हो या बड़ा, भारी हो या हल्का, जड़ हो या चेतन, सब मन के ही रूप हैं।

मन ही मैला मन ही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा।
एही मन सबन को देखे, मन को किनहूं न दीठा।। ५ ।।

कपट और निर्मलता मन के ही रूप हैं। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध और प्रेम मन के ही रूप हैं। महामतिजी कहते हैं कि सबके अन्दर व्याप्त होकर नारायण सबको देख रहा है, परन्तु नारायण को किसी ने नहीं देखा।

सब मन में ना कछू मन में, खाली मन मनही में ब्रह्म।
महामत मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम।। ६ ।।

सारा संसार आदि-नारायण के मन में है। यह सपने का है। वह कुछ नहीं है। अव्याकृत जो अक्षरब्रह्म के मन का स्वरूप है उसमें संसार का कुछ नहीं है। अक्षर ब्रह्म के मन में केवल पारब्रह्म की पहचान है। श्री महामतिजी कहते हैं कि इस अक्षर ब्रह्म के मन के स्वरूप को वही जान सकती है जिन ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की पहचान हो गई है।

॥ प्रकरण ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ ५०० ॥

राग केदारो

खिन एक लेहु लटक भंजाए।
जनमतही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए।। १ ।।

हे जीव! तुझे एक क्षण का समय मिला है। इसमें तू अपना उद्धार कर ले। जन्म से ही तेरा अंग झूठा है। पता नहीं कब मिट जाए।

हे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए।। २ ।।

हे जीव! तू इस क्षण भर के नाटक में क्यों मस्त हो रहा है? देखते ही देखते कितने मर गए। तू अपने मालिक को पाकर भी क्यों भूल रहा है?

आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए।। ३ ।।

इस संसार में जो चक्रवर्ती राजा कहलाए वह भी राजपाट की ठाठ भोगकर चले गए। बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु को भी मौत नहीं छोड़ती।

Nijanand App